स्नातक कला उपाधि (सामान्य)
(BAG)
संस्कृत
BSKE-142 रंगमंच और नाट्यकला

सत्रीय कार्य(Assignment)
(जुलाई 2025 सत्र के लिए
बी.ए. छठें सेमेस्टर हेतु)

मानविकी विद्यापीठ
इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
मैदान गढ़ी, नई दिल्ली–110068

स्नातक कला उपाधि (सामान्य)
(BAG)
संस्कृत
BSKE-142 रंगमंच और नाट्यकला

पाठ्यक्रम कोड :BSKE **-142** /2026/

छात्र/छात्राओं !

यह सत्रीय कार्य शिक्षक जॉच सत्रीय कार्य है, इसके लिए 100 अंक निर्धारित हैं। इस सत्रीय कार्य में पूरे पाठ्यक्रम से प्रश्न पूछे जाएँगे।

उद्देश्यः आपने पाठ्य सामग्री को कितना समझा है और आप उसे अपने शब्दों में कैसे प्रस्तुत कर सकते हैं, इसी का मूल्यांकन करना इस सत्रीय कार्य का उद्देश्य है, यहॉ पाठय सामग्री की पुनर्प्रस्तुति से तात्पर्य नहीं है।

निर्देशः– सत्रीय कार्य आरम्भ करने से पूर्व निम्नलिखित बातों को ध्यान से पढ़िएः

1. अपनी उत्तर पुस्तिकाओं के पहले पृष्ठ के दायें सिरे पर अनुक्रमांक, नाम पूरा पता और दिनांक लिखिए।
2. बाईं ओर पाठयक्रमय का शीर्षक, सत्रीय कार्य संख्या और अपने अध्ययन केन्द्र का उल्लेख करें जैसा आगे प्रदर्शित हैः

अनुक्रमांकः...

नामः...

पताः...

पाठ्यक्रम का नाम/कोडः...

सत्रीय कार्य कोड...

अध्ययन केन्द्र का नाम/कोडः.............................

दिनांकः...

3. उत्तर के लिए केवल फुलस्केप के आकार के कागज़ का प्रयोग करें और उन कागज़ों को अच्छी तरह से बाँध लें।
4. प्रत्येक उत्तर के पहले प्रश्न संख्या अवश्य लिखें और अपनी ही लिखावट में उत्तर दें।
5. सत्रीय कार्य पूरा करके जाँच के लिए अपने अध्ययन केन्द्र के संयोजक (Coordinator) के पास निर्धारित तिथि तक अवश्य जमा करा दें।

विशेष ध्यातव्य :

उत्तर देने के लिए आप निम्नलिखित विधि से तैयारी करेंगे तो आपके लिए लाभप्रद होगा :

1. **अध्ययन** : सबसे पहले सत्रीय कार्य को ध्यान से पढ़े। पुनः इससे सम्बन्धित इकाइयों का अध्ययन कीजिए। अन्त में प्रत्येक प्रश्न के सम्बन्ध में सभी महत्वपूर्ण बातें नोट कर लीजिए और उन्हें तार्किक ढंग से पुनर्व्यवस्थित कीजिए।

2. **अभ्यास** : अपने उत्तर का प्रारूप लिखने से पूर्व नोट की गई बातों पर विचार कीजिए। निबन्धात्मक और टिप्पणीपरक प्रश्नों में आरंभ और उपसंहार का विशेष ध्यान दीजिए। उत्तर के आरम्भिक अंश में प्रश्न की संक्षिप्त व्याख्या और अपने उत्तर की दिशा का संकेत अवश्य दे देना चाहिए। मध्य भाग में आप उत्तर का मुख्य भाग आवश्यक विस्तार के साथ क्रमबद्ध और तार्किक ढंग से प्रस्तुत करें। उपसंहार में उत्तर का सार लिखना चाहिए।

3. यह सुनिश्चित कर लीजिए कि :

क) आपका उत्त्तर तार्किक एवं क्रमबद्ध हो।
ख) वाक्यों और अनुच्छेदों (Paragraphs) के बीच स्पष्टता हो।
ग) दिया गया उत्तर आपकी अभिव्यक्ति, शैली और प्रस्तुति के पूर्णतया अनुकूल हो।
घ) कोई भी उत्तर प्रश्न में निर्धारित शब्दों से अधिक न हो।
ङ) आपके लेखन में भाषागत त्रुटियाँ न हों।

4. **प्रस्तुति** : जब आप अपने उत्तर से पूर्णतया संतुष्ट हो जाएँ तो उसको साफ और सुंदर अक्षरों में उत्तर पुस्तिका में लिख लीजिए तथा जिन बातों पर आप ज़ोर देना चाहते हैं उन्हें रेखांकित कर दीजिए।

5. **विशेष** : अपने उत्तर की फ़ोटो प्रति/कार्बन प्रति अपने पास अवश्य रखें।

नोटः विश्वविद्यालय के नए नियमानुसार परीक्षा में बैठने से पूर्व सत्रीय कार्य जमा कराना अनिवार्य है अन्यथा आपको परीक्षा में बैठने की अनुमति नहीं होगी।

स्नातक कला उपाधि (सामान्य)
(BAG)
संस्कृत
BSKE-142 रंगमंच और नाट्यकला

(सत्रीय कार्य)

पाठ्यक्रम कोड BSKE-142 .
सत्रीय कार्य कोड : BSKE-142 /2026
कुल अंक : 100

नोट : यह सत्रीय कार्य 02 खण्डों में विभक्त हैं। सभी खण्ड अनिवार्य हैं। 15 अंक के प्रश्नों का विस्तृत उत्तर दीजिए। 10 अंक के प्रश्नों का लगभग आठ सौ शब्दों में उत्तर देना है।

खण्ड–1

निर्देश– निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही चार प्रश्नों के विस्तृत उत्तर दीजिए :

15X4=60

1.नाट्यगृह निर्माण की विधि का विस्तार से वर्णन कीजिए।
2. आचार्य रेवाप्रसाद द्विवेदी के मत में नाट्यगृह निर्माण विषयक सिद्धान्तों का वर्णन कीजिए।
3. विभिन्न आचार्यों के अनुसार नाट्य की परिभाषा बताते हुए नाटक के किन्हीं चार भेदों का वर्णन कीजिए।
4. नाट्यगृह को परिभाषित करते हुए विकृष्ट और आयत नाट्यगृह का वर्णन कीजिए।
5.रूपक किसे कहते हैं ? दशरूपकों का विस्तार से वर्णन कीजिए।
6.वर्गाकार नाट्यगृह का विस्तार से वर्णन कीजिए।
7.नाट्यगृह के प्रकारों के लिए भरतमुनि ने क्या प्रतिपादन किया है? वर्णन कीजिए।

खण्ड–2

4X10=40

निर्देशः अधोलिखित प्रश्नों में से किन्ही चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1.कार्य की अवस्थाओं का उल्लेख कीजिए।
2.नायिका की परिभाषा बताते हुए मुख्य भेदों का उल्लेख कीजिए।
3.नाटक और प्रकरण में क्या अन्तर है? टिप्पणी लिखिए।
4.अभिनय की परिभाषा करते हुए उसके भेदों का वर्णन कीजिए।
5.नायक के भेदों का उदाहरण सहित वर्णन कीजिए।
6.आधिकारिक और प्रासंगिक कथा वस्तु का वर्णन कीजिए।
7.अर्थ प्रकृतियों पर टिप्पणी लिखिए।